International Journal of Applied Research 2020; 6(8): 215-217

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(8): 215-217
www.allresearchjournal.com
Received: 01-06-2020
Accepted: 08-07-2020

डॉ. अरविन्द मैन्दोला
सह–आचार्य ''चित्रकला'',
राजकीय कन्या महाविद्यालय,
किशनपोल, जयपुर, राजस्थान,
भारत

Corresponding Author:
डॉ. अरविन्द मैन्दोला
सह–आचार्य ''चित्रकला'',
राजकीय कन्या महाविद्यालय,
किशनपोल, जयपुर, राजस्थान,
भारत

जयपुर भितिचित्रों के अलंकरण में क्षैत्रिय प्रभाव

डॉ. अरविन्द मैन्दोला

सारांश
भारतीय कला में अतीत से वर्तमान तमक विभिन्न शैलियों का विकास होता है। किसी भी शैली में विकास में दूसरी शैली का भी सहयोग रहता है। भारतीय चित्र परम्परा में प्रत्येक शैली का अस्तित्व एक दूसरे पर आधारित है जैसे मुगल कला ने भारतीय शैली से कुछ तत्व ग्रहण किये तथा कुछ तत्व प्रदान भी किये। जयपुर भित्ति चित्रों में अलंकरणों पर भी बाहरी तत्वों का प्रभाव देखने को मिलता हैं। प्रारम्भिका अलंकरण जैन या अपभ्रंश शैली से प्रभावित रहे जिससे अलंकरणों में सरलीकृत आकार, सपाट रंग, एवं कठोर रेखाये देखने को मिलती है। 17 एवं 18 शताब्दी में गुगल प्रभाव के कारण अर्द्ध वृताकार वृर्त में संयोजन मिलता हैं। मुगल काल के प्रभाव से बारीक रेखाकंन, पशु–पक्षी चित्रण, हाशियों में अलंकरण दिखाई देता है।

कूटशब्दः शैलीगत प्रभाव, समीपवर्ती, गुहा चित्र, हस्त लिखित ग्रंथ, पाण्डुलिपियों, पोथिया, कल्पसूत्र, अर्द्ध वृताकार संयोजन, पुष्प लतिकायें, पुष्पित गमले, वस्त्र–विन्यास, लोकसंस्कृति

प्रस्तावना
भारतीय कला जगत में अतीत से वर्तमान तक विभिन्न चित्र शैलियों का विकास होता रहा है इनमें उदभव एवं रूप विशेषताओं का निर्धारण तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश के आधार पर निर्भर करता हैं। साथ ही किसी शैली के विकास में दूसरी शैली का भी सहयोग रहता हैं। प्रत्येक चित्रकार किसी न किसी शैली या चित्रण प्रक्रिया से प्रभावित होता है जिससे उसके मिश्रण में उसका प्रभाव आ जाता है।
भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में विभिन्न शैलियां विकासशील है। प्रत्येक का अस्तित्व एक दूसरे पर आधारित है, जैसे मुगल कला ने भारतीय शैली से कुछ तत्व ग्रहण किए तथा कुछ तत्व प्रदान किए। मुगल कला एवंम ईरानी शैली भारतीय शैली का मिश्रित रूप हैं। इसी प्रकार सुप्रसिद्ध कागड़ा शैली राजपूत शैली की शाखा है।
राजस्थानी कलम की जयपुर शैली भी अन्य क्षेत्रिय तत्वों से प्रभावित हुई है तथा अपने समीपवर्ती क्षेत्रों की शैलियों को प्रभावित किया हैं। इस शैली पर मुख्यतः लोककला, मुगल कला तथा आंशिक रूप से यूरोपियन प्रभाव दिखाई देता है। जिसे हम शैलीगत विकास के विभिन्न चरणों के भिती चित्रों के अलंकरणों में देखते हैं। इसके अतिरिक्त जयपुर क्षेत्र की सीमा मे शेखावाटी, बीकानेर, पूर्व में अलवर, भरतपुर, करौली, पश्चिमक में मेवाड़ किशनगढ, जोधपुर, दक्षिण में कोटा, बून्दी तथा टोंक से जुडी रही है। समीवर्ती क्षेत्र होने के कारण इन क्षेत्र का प्रभाव अलंकरणों में भी हुआ है।

जैन प्रभावः भारतीय दर्शन में साहित्य और कला के क्षेत्र में जैन कला का विशेष योगदान है। जैन चित्र शैली के संदर्भ में कहा जाता है कि, यह भारत की प्राचीनतम् चित्र शैली है जिसका आदि स्वरूप सितनवासल के गुहा चित्रों का निर्माण के समय हुआ है।
जैन चित्रकला में धार्मिक ग्रंथो को अलंकृत करने की प्रथा रही है। अपभ्रंश काल की कला सामग्री सबसे अधिक प्राप्त होती है। प्राचीन गुफाओं से प्राप्त चित्रों के बाद ताड़पत्र और काष्ट पट्टिकाओं के चित्र मिलते है। ये चित्र संग्रहालयों, जैन भंडारों एवं अनेक निजी संग्रहों में आज भी उपलब्ध हैं। जैसेलमेर, पाटन, ख्यात आदि के जैन भण्डारों में 12वीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी तक की अनेक सचित्र ताड़पत्रिय पोथिया पाई गई है। 14वीं–15वीं शताब्दी से वस्त्र पर भी चित्र बनने लगे थे, इसके पश्चात 14 वीं शताब्दी से कागज की हस्त लिखित पोथिया जैसे कल्पसूत्र, कलिकाचार्य, आदि पुराण आदि की सचित्र पाण्डुलिपियाँ मिलने लगती है।
राजस्थानी चित्रों का मूल स्त्रोत प्राचीन अपभ्रंश शैली या जैन शैली में पूर्णतया अलंकारिक परम्परा दिखाई पडती है। जैन चित्र पशु–पक्षियों और प्राकृतिक लता गुल्मों से अंलकृत रहते हैं एव लाल व पीले रंग की प्रधानता रहती है।

प्रारम्भिक भित्ती चित्रों के अलंकरणों में जैन शैली के सरलीकृत आकार, सपाट रंग, कठोर रेखाओं का प्रभाव परिलक्षित होता है। इसी प्रकार के अलंकरण हम जयपुर के गणेश पोल के भिती चित्र ''भगवान गणेश'' एवं मानसिंह से प्राप्त भितिचित्रों अलंकरण में देखते है। इसके अतिरिक्त इसी चित्र में हम 1506 ई. के जैन संगमनों उपसर्ग पोथी चित्रों के पुष्प अलंकरण के समान दिखाई देते है। समयानुसार यहां के रंग संयोजन में अवश्य परिवर्तन हुआ है। परन्तु मूल आकार जैन संगमनों उपसर्ग चित्र में पाये गये अलंकरण का रूप ही है। जयपुर के बैराठ से प्राप्त भीम द्वारा कौरव–वध एवं गलता क्षेत्र से प्राप्त चित्रों के अलंकरणों से मिलते है। आमेर के निकट मुंशी दिगम्बर जैन मदिर एवं चूलगिरी की जैन नसियां से प्राप्त से प्राप्त भित्ती अलंकरणों के आकार सृजन में भी हम 14वीं शताब्दी के जैन अलंकरण की साम्यता देखते हैं। जयपुर के भिति चित्रों पर मुगल चित्रकारों ने अनेकों स्थानों पर प्रभावशाली प्रभाव डाला हैं। 17 वीं शताब्दी में पूर्व में या 18वीं शताब्दी के उत्तर काल में मुगल प्रभाव अधिक रहा है। आकार संयोजन में अर्द्ध वृताकार वृर्त में संयोजन मुगल शैली की ही देन है।

जयपुर क्षेत्र के प्रारम्भिक भित्ति चित्रों के अलंकरणों से ही मुगल कला का प्रभाव दृष्टिगत होता हैं। बैराठ के मुगल द्वार पर बने भित्ति चित्रों के अलंकरण अकबर राजपूत कला को व्यक्त करते है। इनके साथ जो अलंकारित चित्रित कृतियां है, अकबर के अन्तिम शासन काल की या जहांगीर के प्रारम्भिक काल की है। मानसिंह महल के बेल–बूटे भी, अकबर–ए–जहांगीर कालीन जयपुर शैली का परिचय देते हैं। मानसिंह की छतरी (1614–1620) में अलंकरण विवरणों को मुगल छतरी का आकार देकर ही चित्रित किया गया है। इसी तरह के आकार हमें भावपुर की छतरी में मिलते हैं।

मुगल काल के प्रभाव से ही रेखाकन में बारीकी, चित्रण पद्धति में कुशलता, वर्ण योजना में विविधता तथा आकृतियों में सुन्दरता आयी । पुण्डरीक जी की हवेली, पुरोहित जी की हवेली के भित्ति अलंकरण इसमें श्रेष्ठ उदाहरण हैं। इनमें प्रयुक्त ज्यामितिक एवं प्राकृतिक अलंकरणों का संयोजन रंग–विन्यास मुगल कला की देन है। मुगल काल में आलेखन में पशु–पक्षियों को भी अलंकरण रूप में प्रयोग किया है। इसी तरह से यहा भी विशेषतः पक्षियों को चित्र में सुन्दरता लाने हेतु अलंकृत किया गया है। इसके उदाहरण हम पुरोहित जी की हवेली के भित्ति अलंकरण में देख सकते है। मुगल–चित्रों के समान ही आलों में पुष्पित गमले, सुराईयां, या अन्य पात्र आमेर में अलंकृत किये गये है। कुछ गमलों में तो सम्पूर्ण द्रश्य की झांकी चित्रित की गई है। जिससे पात्र की शोभा कई गुना बढ जाती है। आले के उपर सीमा रेखाओं में भी पुष्प लतिकाएं मुगल प्रभाव लिए संयोजित की है। 17 वीं शताब्दी में रिजा अब्बासी शैली के कारण के नवीन परिवर्तन आते है। इस समय वस्त्र–विन्यास में सोने चांदी के पुष्प अलंकृत किए जाने लगे। इनका प्रभाव यहां भी देखा जा सकता है। आमेर का शीश महल एवं सुख निवास में कांच के रंगीन टुकडों का समिश्रण मुगल प्रभाव के ध्योतक है। मुगल चित्रों का प्रभाव जयुपर के भित्ति अलंकरण पर इतना अधिक हैं, जो राजस्थान के अन्य राज्यों में नहीं मिलता है। इसके उदाहरण हम गणेश पोल, गलता क्षेत्र, पुरोहित जी की हवेली, आदर्श नगर, शमशाना घाट छतरियों के भित्ती अलंकरणों में देखते है।

मिश्रित प्रभावः हमारे धर्म, समाज, साहित्य और कला में सत्यम, शिवम और सुन्दरम की अवधारणा रही है। जयपुर के चित्रों में अलंकरण का जो स्वरूप उभर कर सामने आया हैं उसका क्रमिक विकास दो रूपों में आगे बढ़ता दिखाई देता है, जिसमें एक रूप तों शास्त्रीय रहा हैं, जिसके निर्माता चित्रकार राज्य आश्रित रहे और दूसरे रूप में भित्ति चित्र एवं उनके अलंकरण स्वतंत्र रूप से लोक परम्पराओं द्वारा आगे बढते दिखाई पडते है। प्राप्त चित्रों कें अलंकरण राज्याश्रित एवं शास्त्रीय स्वरूप में स्वदेशी तत्व को स्पष्ट पहचान लेना बहुत ही मुश्किल कार्य है, क्योंकि दोनों का ही विकास साथ–साथ एवं निरन्तर होता रहा हैं। लोकतत्व, लोकसंस्कृति में चित्रण परम्पराओं से समझ कर उन्हें भित्ती चित्रों के शास्त्रीय स्वरूप के मध्य पहचाना जा सकता है।

जयपुर क्षेत्र में भित्ती अलंकरणों को देखने से ज्ञात होता है कि, इसके प्रारम्भिक चित्रों एवं अलकरणों में लोक शैली का प्रभाव ओत–प्रोत है, बाद में फारसी प्रभाव से युक्त अलंकरण बने हैं। 18वीं शताब्दी के अन्त तक भित्ति अलंकरणों में पाश्चात्य प्रभाव भी पडने लगता हैं। इसके साथ–साथ मुख्य रूप से पत्तियों का अलंकृत रूपों में मूर्तिकला का प्रभाव भी दिखाई देता है। भावपुरा की छतरी, मानसिंह की छतरी तथा बैराठ से प्राप्त भित्ती अलंकृत चित्र प्रमुख हैं। भावपुरा तथा मानसिंह की छतरी के अलंकरणों में वृक्षों तथा भवनों के अलंकरणों का अंकन प्रतिकात्मक तथा अलंकारिक है। रंगों में लोककला की भांति सपाटपन दिखाई देता है। अलंकरण संयोजन में भी आकार के अनुसार आलंकारिक रूप प्रदान किया गया हैं। पत्तियों का अंकन एवं रेखाओं में लोक प्रभाव है। सभी आकारों को अधिक परिष्कृत रूपों में नही बनाये गये है।

ईरानी प्रभावः ईसवी पूर्व छटी शताब्दी का मध्य भाग प्राचीन संस्कृति का आदिम काल माना गया है। ईरान सभ्यता का प्रभाव ऐशिया ईराक, फीलिस्तीन, तुर्कीस्तान, अफगानिस्तान और भारत तक व्याप्त था। भारत में पंजाब सिन्ध कश्मीर और उत्तरी भारत के कुछ हिस्सों में ईरानी संस्कृति की छाप रही थी। इसका प्रभाव यह हुआ है कि, मिश्र से लेकर सिन्ध तक के विकास विस्तृत भूभाग के निवासियों में सांस्कृतिक एवं कलात्मक तत्व जुड गये। उक्त सभी देशों की भांति भारत पर ईरानी शिल्प का गहरा प्रभाव हुआ। जिससे कई नई शौलियों का उदय हुआ। मुगल कला का जन्म स्थान समरकन्द और हितात था। 15वीं शताब्दी में तैमूर वंश के संरक्षण में ईरान की कला उत्कर्ष को प्राप्त होती है, इस वंश के शासकों ने चित्र एवं उनकी सजावट अलंकरण को विशेष प्रोत्साहित किया।

ईरानी प्रभाव के कारण यहां के भित्ति–अलंकरणों के रेखांकन में बारीकी और ईस्लामी सूक्ष्म नक्काशी की छाप दिखाई पडती हैं। यहां के अलंकरण विशेष रूप से रेखा पर भी आधारित है। अलंकरणों की रेखाएं गोलाई युक्त न बनकर, सपाटदार कोण युक्त बनी हैं, जो ईरानी दृष्टिकोण दिखाई देता है। इस तरह के अलंकरण हमें सिटी पैलेसे के गणेश पोल, आमेर, चतुर्भुज जी का मंदिर गलता, में मुख्यतः मिलते है। यहां से प्राप्त भित्तियों के ज्यामितिक अलंकरण ईरानी संयोजन की ही देन है। ईरानी चित्रों में हासीयें बनाने की प्रथा प्रचलित थी। चित्रों के हाशियें अलंकारिक अभिप्राओ, पशु पक्षियों, पुष्प पत्तियों से अलंकृत किये गये हैं, इन हासियों में सुनहरी रंगों का प्रयोग मनोरम है। जयपुर क्षेत्र के भित्ति चित्रों के अलंकरण में स्वर्ण का प्रयोग 18वीं का एवं 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ से किया जाने लगा। जिसका परिणाम हमे चूलगिरी जैन नसियां, मंशी जैन दिगम्बर, जैन मंदिर आमेर के भित्ति अलंकरणों में देखते है। यहां के चित्रो में मेहराबदार जालियों युक्त तथा फूल पत्तों की नक्काशी कार्य से अलंकृत भवन बनाये गये हैं। इसका उत्कृष्ट उदाहरण हम पुरोहित जी हवेली के अतिरिक्त आमेर के गणेश पोल भित्ति, आदर्श नगर शमशान घाट की छतरियों में हम देखते है। आमेर में स्थित ''शीशमहल'' ईरानी प्रेरणा का जीता जागता नमूना हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।

पाश्चात्य कला का प्रभावः जयपुर क्षेत्र पर राजनैतिक कारणों से शासकों द्वारा अंग्रेजों से संधि कर ली गई अतः 19वीं शताब्दी तक पहुंचते–पहुंचते चित्रकारो द्वारा विदेशी प्रभाव ग्रहण करना प्रारम्भ कर दिया था इसके समय फोटोग्राफी का प्रभाव अधिक

पड़ता है। महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय तथा महाराजा राम सिंह के समय में विदेशी प्रभाव अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया था। यूरोपियन प्रभाव से परिपेक्ष का भी प्रयोग होने लगा। राजा रामसिंह के समय में बनी पुरोहित जी की हवेली, जैन नसियां के भित्ति चित्रों के अलंकरण में यूरोपियन प्रभाव लिए अलंकत आकृतियां बनी दिखाई देती हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि, जयपुर के भित्ति चित्रों के अलंकरणों पर बाह्य क्षेत्रीय तत्वों का प्रभाव पडा, जिनमे जैन, मुगल ईरानी प्रभाव प्रमुख है। परन्तु यहां की अलंकरण शैली इन बाह्य तत्वों को अपने में समाहित करती हुई अपना नीजित्व नष्ट नही करती है, बल्कि उसके अलंकरण अपनी मौलिकता बनाये रखते हुए अधिक सौन्दर्यात्मक होते गये है।

संदर्भ

1. कुमारी चन्द्रा एच समावत – राजस्थानी चित्रकला – जैन शैली आकृति 1966 – अंक – 8
2. डॉ0 वीरेन्द्र नाथ–नालंदा म्यूरल्स – 1983 – पृष्ठ – 10–15
3. एच. घौष–इंडियन पेन्टिग इन मुस्लिम पिरीयड – 1947 – पृष्ठ – 13–30
4. डॉ0 रामनाथ–मध्यकालीन भारतीय कलाऐं तथा उनका विकास, जयपुर 1973, पृष्ठ – 15–17
5. भाउ समर्थः– चित्रकला और समाज पृ. 17–19
6. एम.एल. शर्मा :– हिस्ट्री ऑफ द जयपुर स्टेट पृ. 2
7. झूटालाल नाढलाः– ढूंढालू संस्कृति और परम्परा पृ. 10
8. जगदीश सिंह गहलोत– राजस्थान में इतिहास में तिथिक्रम पृ. 1